

योना की कहानी से मिलने वाली सीख और चेतावनियाँ

योना द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन और उसका प्रभाव

योना ने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया और अपनी बुद्धि से निर्णय लिया, जो उसे परमेश्वर के विरुद्ध ले गया। परिणामस्वरूप, वह न केवल स्वयं मुसीबत में पड़ा, बल्कि उसके कारण जहाज पर मौजूद अन्य निर्दोष लोगों की जान भी खतरे में पड़ गई।

क्या यह अन्याय था?

पहली नजर में यह अनुचित लग सकता है कि एक व्यक्ति की गलती की सजा पूरे जहाज को क्यों मिली। लेकिन जब हम इस घटना के परिणामों को देखते हैं, तो समझ में आता है कि परमेश्वर ने इसे एक बड़ी योजना के तहत होने दिया।

परिणाम जो उद्धार की ओर ले गए:

1. अंधविश्वास से सच्चाई की ओर

- जहाज पर मौजूद लोग अलग-अलग देवताओं की पूजा कर रहे थे।
- जब उन्होंने अपने देवताओं से मदद मांगी, तब भी आंधी शांत नहीं हुई, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उनके देवता असमर्थ हैं।
- लेकिन जब योना ने स्वीकार किया कि यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है, और यह आंधी उसी के कारण आई है, तो उन सभी लोगों का ध्यान यहोवा की ओर आकर्षित हुआ।

2. अन्य लोगों का भी उद्धार हुआ

- जब योना को समुद्र में फेंका गया, आंधी तुरंत शांत हो गई।
- यह देखकर जहाज के सभी लोग यहोवा का भय मानने लगे और उन्होंने यहोवा को बलिदान चढ़ाया और मन्नतें मानी।
- इससे यह प्रमाणित होता है कि परमेश्वर की योजना सिर्फ योना के लिए ही नहीं थी, बल्कि जहाज पर मौजूद लोगों के लिए भी थी।

हमारे लिए शिक्षा:

- परमेश्वर के विरुद्ध जाने का नुकसान सिर्फ व्यक्तिगत नहीं होता, यह दूसरों को भी प्रभावित कर सकता है।
- परमेश्वर अपनी योजना को पूरा करने के लिए किसी भी परिस्थिति को मोड़ सकता है।
- असली उद्धार वही है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की शक्ति को पहचानकर उसकी ओर मुड़ता है।

योना की प्रार्थना और उससे मिलने वाली शिक्षा

जब योना को समुद्र में फेंका गया, तो यहोवा के आदेश से एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। वह तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा। इस दौरान उसने खुद को बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ। आखिरकार, जब वह पूरी तरह थककर निराश हो गया, तब उसने यहोवा को पुकारा और प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना के बाद, परमेश्वर ने मछली को आदेश दिया कि वह योना को किनारे पर उगल दे।

हमारे जीवन में योना की कहानी का महत्व:

हम भी अक्सर योना की तरह ही व्यवहार करते हैं:

- हम परमेश्वर को जानते हैं, मानते हैं, उसकी आराधना भी करते हैं, लेकिन उसके वचन का पालन नहीं करते।
- हम अपनी इच्छा से चलते हैं और जब उसकी योजना के विरुद्ध कार्य करते हैं, तो समस्याओं में फंस जाते हैं।
- हमारी गलतियों का प्रभाव सिर्फ हम पर ही नहीं, बल्कि हमारे आसपास के लोगों पर भी पड़ता है।
- जब परेशानियाँ आती हैं, तो हम पहले अपनी ताकत और बुद्धि से हल निकालने की कोशिश करते हैं, लेकिन सफल नहीं होते।
- जब पूरी तरह हार जाते हैं, तभी परमेश्वर को पुकारते हैं।

क्या सीखा जा सकता है?

1. पहले ही दिन प्रार्थना करें

- योना अगर पहले ही दिन प्रार्थना कर लेता, तो उसे तीन दिन तक कष्ट नहीं सहना पड़ता।
- हमें भी किसी भी समस्या में पहले परमेश्वर के पास जाना चाहिए, न कि अपनी बुद्धि और ताकत पर निर्भर रहना चाहिए।

2. परमेश्वर की योजना को समझें और स्वीकार करें

- परमेश्वर हमें कभी-कभी कठिन परिस्थितियों में डालता है ताकि हम उसकी ओर लौटें।
- हमें यह सोचना चाहिए कि हमने कहाँ परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया, जिससे यह परेशानी आई।

3. समय रहते आत्मसमर्पण करें

- योना ने अंत में स्वीकार किया कि वह परमेश्वर के बिना कुछ नहीं कर सकता।
- हमें समय रहते ही परमेश्वर की इच्छा के आगे झुक जाना चाहिए।

आज्ञा मानने का महत्व

जब योना ने अपनी गलती स्वीकार कर ली और परमेश्वर की आज्ञा मानी, तो उसने ना सिर्फ अपनी जान बचाई, बल्कि नीनवे के 1,20,000 लोगों को भी विनाश से बचा लिया।

हमारे जीवन में इसका क्या अर्थ है?

1. हमारे निर्णय केवल हमें ही नहीं, बल्कि औरों को भी प्रभावित करते हैं
 - योना की अवज्ञा से जहाज के सभी यात्री संकट में आ गए।
 - लेकिन उसकी आज्ञाकारिता से पूरे नगर को बचाव का अवसर मिला।
 - इसी तरह, हमारे सही या गलत निर्णय हमारे परिवार, समाज और भविष्य पर असर डालते हैं।
2. परमेश्वर की आज्ञा का पालन अनगिनत जिंदगियाँ बदल सकता है
 - अगर योना परमेश्वर की बात मानने से इनकार करता, तो नीनवे का सर्वनाश हो जाता।
 - हमारे जीवन में भी ऐसे अवसर आते हैं जहाँ हमारी आज्ञाकारिता किसी के जीवन को बचा सकती है।
3. अवज्ञा सिर्फ हमारी गलती नहीं, बल्कि दूसरों की हानि का कारण भी बनती है
 - परमेश्वर का आदेश मानने से इनकार करना सिर्फ हमारा व्यक्तिगत नुकसान नहीं करता, बल्कि अनगिनत लोगों को नुकसान पहुँचा सकता है।
 - हमें यह समझना चाहिए कि हमारी अवज्ञा से दूसरों का अनर्थ हो सकता है।

योना का क्रोध और परमेश्वर की दया

नीनवे नगर के उद्धार के बाद, यह स्वाभाविक लगता है कि योना सबसे अधिक प्रसन्न होगा, क्योंकि उसकी प्रचार सेवा के कारण **1,20,000 लोगों का जीवन बच गया**। लेकिन वचन हमें बताता है कि **योना इस बात से दुखी हुआ और क्रोधित हो गया**।

योना की यह प्रतिक्रिया यह दर्शाती है कि **इंसान को चाहे कितना भी अनुग्रह क्यों न मिले, वह अपनी स्वभाविक प्रवृत्ति से बच नहीं सकता**।

परमेश्वर ने योना को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन अंततः **उसे एक और नाटकीय घटना—रेंड के पेड़ की घटना—के द्वारा सिखाना पड़ा**।

जब योना ने नीनवे नगर के बाहर बैठकर देखा कि परमेश्वर इस नगर का नाश करेगा या नहीं, तब परमेश्वर ने **एक पेड़ उगाया, फिर उसे मुरझा दिया, जिससे योना को गर्मी और कष्ट सहना पड़ा**।

फिर परमेश्वर ने उसे यह समझाया कि जब तुझे इस पेड़ के लिए इतनी चिंता है, तो मैं नीनवे के **1,20,000 लोगों पर क्यों दया न करूँ, जो सही और गलत का भी भेद नहीं जानते?**

इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

1. परमेश्वर के विरुद्ध जाना, स्वयं के विनाश को आमंत्रित करना है।
2. परमेश्वर अपनी संपूर्ण सृष्टि पर नियंत्रण रखता है, और हर चीज़ उसकी आज्ञा मानती है—चाहे वह आँधी हो, समुद्र हो, या मछली।
3. इंसान केवल संकट के समय ही परमेश्वर को याद करता है, लेकिन हमें हर समय उसे प्राथमिकता देनी चाहिए।
4. यदि हम सच्चे मन से प्रार्थना करें, तो परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनता है और हम पर दया करता है।
5. परमेश्वर हमें सिखाने के लिए ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है, जहाँ हमें केवल उसी पर निर्भर रहना पड़े।
6. यदि हम पूरे मन से पश्चाताप करें, प्रार्थना करें और सही मार्ग अपनाएँ, तो चाहे हमारे पाप कितने भी बड़े क्यों न हों, परमेश्वर हमें अनुग्रह प्रदान करता है।
7. सबसे महत्वपूर्ण सीख:
 - हो सकता है कि हमारे पापों के कारण परमेश्वर क्रोधित हो, लेकिन यदि हम समय रहते अपने पापों को स्वीकार कर, हृदय परिवर्तन करें और अपने जीवन को परमेश्वर को समर्पित करें, तो वह हम पर दया करता है और उद्धार प्रदान करता है।

अब हम वचनों के उन गहन अर्थ को समझने चलते हैं, जिनका प्रयोग इस कथा को कहने से कहीं परे है। आइए, अब उस गहराई में प्रकाश डालते हैं, जिससे मेरी और आपकी समझ और भी स्पष्ट और सरल हो सके। मैंने इसे प्रश्न और उत्तर के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रश्न 01: यहोवा ने नीनवे के विरुद्ध प्रचार करने को क्यों कहा?

उत्तर: यहोवा ने योना से यह क्यों नहीं कहा कि "मेरा प्रचार कर," या "नीनवे के लोगों से कह कि वे मन परिवर्तन करें और मेरी स्तुति करें"? इसके बजाय, उसने सीधे कहा कि "चालीस दिनों में नीनवे को उलट दिया जाएगा।"

इसका कारण क्या था?

नीनवे के लोग पाप के दलदल में इस कदर डूब चुके थे कि उन्हें यह समझाना व्यर्थ होता कि उनका जीवन किस ओर जा रहा है।

- जब किसी को पाप में मज़ा आने लगता है, तो वह यह सोचता ही नहीं कि वह पवित्रता की ओर बढ़ रहा है या पाप की ओर।
- अगर योना बस उन्हें समझाने की कोशिश करता कि "अपने पापों को छोड़ दो और मन फिराओ," तो वे इस चेतावनी को अनसुना कर देते।
- लेकिन जब जान का खतरा सामने होता है, तो इंसान सचेत हो जाता है।

परमेश्वर की सख्ती की वजह

यहोवा जानता था कि नीनवे के लोग मज़े में डूबे हुए हैं और केवल कड़े शब्दों से ही जाग सकते हैं।

इसलिए उसने चेतावनी दी: "अगर तुमने 40 दिनों में मन नहीं फिराया, तो तुम्हारा नगर नष्ट हो जाएगा।"

हमारी ज़िंदगी में इसका क्या मतलब है?

हममें से कई लोग पाप में इतने गहरे डूबे होते हैं कि परमेश्वर हमें बार-बार समझाने की कोशिश करता है। लेकिन जब हम बार-बार उसकी चेतावनियों को अनदेखा करते हैं, तब परमेश्वर हमारे जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आने देता है जो हमें हिला देती हैं।

- गंभीर बीमारियाँ (जैसे लकवा, किडनी फेल होना)
- भयानक दुर्घटनाएँ
- बुरी आत्माओं के प्रभाव में फँसना
- नशे और व्यसनो में डूब जाना

परमेश्वर की अंतिम चेतावनी

इन कठिनाइयों को शैतान का षड्यंत्र समझकर हमें यह नहीं कहना चाहिए कि "परमेश्वर मुझसे प्यार नहीं करता।" बल्कि यह समझना चाहिए कि यह परमेश्वर की अंतिम चेतावनी है—वह हमें बचाना चाहता है! अगर हम समय रहते मन फिराएँ और परमेश्वर के पास लौटें, तो वह हमें बचा सकता है। यही कारण था कि यहोवा ने नीनवे को सख्त चेतावनी दी—क्योंकि वह उन्हें बचाना चाहता था, न कि नष्ट करना।

प्रश्न 02: योना ने यह क्यों कहा कि "मुझे समुद्र में फेंक दो, तब समुद्र शांत हो जाएगा"? उसने यह क्यों नहीं कहा कि "मैं अपने पापों का पश्चाताप करता हूँ और यहोवा से प्रार्थना करता हूँ, तुम सब भी ऐसा करो ताकि यहोवा इस आंधी को रोक दे"?

उत्तर:

जब हम पाप करते हैं, तो हमारा पवित्रता से एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाता है और हमारा संबंध पवित्र आत्मा से टूट जाता है।

- हमारे निर्णय लेने की क्षमता पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होती है।
- लेकिन जब हम पाप करते हैं, तो यह मार्गदर्शन कमजोर हो जाता है।
- योना के मामले में, उसने पहले ही यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया था, जिससे उसकी आत्मिक समझ धुंधली हो गई थी।

इसलिए उसने गलत निर्णय लिया:

- खुद को समुद्र में फेंकने के बजाय प्रार्थना करना ज्यादा आसान होता।
- लेकिन चूँकि योना अब पवित्र आत्मा की अगुवाई में नहीं था, वह सही निर्णय नहीं ले सका।
- यही कारण है कि जब इंसान एक बार पाप करता है, तो वह दोबारा पाप करने से खुद को रोक नहीं पाता।

सीख:

पाप हमें धीरे-धीरे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से दूर कर देता है, जिससे हम गलत फैसले लेने लगते हैं। इसलिए हमें हमेशा पवित्र आत्मा से जुड़े रहना चाहिए और किसी भी पाप के बाद तुरंत पश्चाताप करना चाहिए, ताकि हम सही निर्णय ले सकें।

प्रश्न 03: मछली के पेट में योना तीन दिन क्यों पड़ा रहा?

उत्तर:

खुदा योना का इंतजार कर रहा था कि वह कब समझेगा कि उसके लिए सही क्या है और कब वह अपनी गलतियों का पश्चाताप करके खुद को पूरी तरह से उसके हाथों में सौंप देगा।

इससे हमें यह सीख मिलती है:

- कई बार लोग सालों तक अपनी तकलीफों में रहते हैं क्योंकि वे सिर्फ डॉक्टरों, इंसानों या अपनी खुद की बुद्धि पर भरोसा करते हैं।
- लेकिन कुछ लोग एक ही पल में ठीक हो जाते हैं क्योंकि वे खुद को पूरी तरह से खुदा के हाथों में सौंप देते हैं।

योना को भी यह समझने में तीन दिन लग गए कि उसकी मुक्ति सिर्फ खुदा में है, इसलिए जब उसने समर्पण किया, तो खुदा ने मछली को आज्ञा दी कि वह उसे किनारे पर उगल दे।

सीख:

हमें भी अपनी तकलीफों को खुदा के हाथों में सौंपना चाहिए, बजाय इसके कि हम अपनी बुद्धि और योजनाओं पर निर्भर रहें। जब हम समर्पण करते हैं, तो मुक्ति जल्दी मिलती है।

प्रश्न 04: जब योना मछली के पेट में रहकर प्रार्थना कर रहा था, तब उसने यह क्यों कहा कि "जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर मन लगाते हैं, वे अपने करुणानिधान को छोड़ देते हैं"?

उत्तर:

योना ने यह बात अपने अनुभव से कही क्योंकि उसने अभी-अभी खुद अपने करुणानिधान (यहोवा) को खो दिया था।

इसका कारण:

- खुदा ने उसे नीनवे जाने को कहा था, लेकिन उसने अपनी इच्छा से तरशीश जाने का फैसला किया।
- नीनवे (दुश्मनों का नगर) उसे मुश्किलों और चुनौतियों से भरा लगा, जबकि तरशीश (मित्रों का नगर) उसे आरामदायक और सुरक्षित महसूस हुआ।
- अपनी सहूलियत और आराम को चुनने के कारण उसने खुदा की आज्ञा को टाल दिया और व्यर्थ की चीजों (सुरक्षा, आराम, मान-सम्मान) पर मन लगा दिया।
- परिणामस्वरूप, वह मछली के पेट में पड़ा हुआ कष्ट सह रहा था।

सीख:

- जब हम व्यर्थ की चीजों (सुख-सुविधाएं, मान-सम्मान, अपनी इच्छाएं) पर ध्यान देते हैं, तो हम भी अपने करुणानिधान (खुदा) को खो सकते हैं।
- अगर योना ने खुदा की योजना को पहले ही स्वीकार कर लिया होता, तो उसे यह कष्ट नहीं उठाना पड़ता।
- इसलिए, हमें भी खुदा की इच्छा को प्राथमिकता देनी चाहिए, नहीं तो हम भी अपने जीवन में आंधियों और संकटों को बुलावा दे सकते हैं।

प्रश्न 05: योना के प्रचार को सुनकर सबसे पहले उपवास का प्रचार किसने किया और क्यों?

उत्तर:

सबसे पहले नीनवे नगर के लोगों ने उपवास का प्रचार किया, न कि उनके राजा ने।

इसका कारण:

- जब नीनवे के लोगों ने सुना कि **40 दिनों में उनका नगर नष्ट होने वाला है**, तो उन्होंने बिना किसी आदेश का इंतजार किए स्वयं उपवास और प्रार्थना शुरू कर दी।
- उन्होंने यह नहीं सोचा कि राजा क्या कहेगा या क्या करेगा, बल्कि वे तुरंत मन फिराने लगे।
- बाद में जब यह खबर राजा तक पहुंची, तब राजा ने भी अपने सिंहासन से उठकर, अपने राजसी वस्त्र उतारकर, टाट पहन लिया और उपवास का आदेश दिया।

सीख:

- अगर हमें किसी गंभीर समस्या या संकट का पता चले, तो हमें खुद ही उपवास और प्रार्थना शुरू कर देनी चाहिए।
 - हमें यह इंतजार नहीं करना चाहिए कि कोई बड़ा नेता, पादरी (पास्तर जी) या कोई और हमें उपदेश दे।
 - सच्ची आत्मिक जागरूकता यह है कि हम अपने गुनाहों का एहसास खुद करें और खुदा की ओर पहले कदम बढ़ाएं।
-

प्रश्न 06: नीनवे के राजा ने पशुओं से भी उपवास क्यों करवाया?

उत्तर:

यह सुनने में अजीब लग सकता है कि **पशुओं को उपवास करवाने से क्या फर्क पड़ता?** जब कि प्रजा पहले ही उपवास कर रही थी और परमेश्वर से दया की प्रार्थना कर रही थी।

लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि जो कोई भी परमेश्वर की महिमा में थोड़ा सा भी योगदान देता है, वह उसका प्रतिफल अवश्य पाता है।

इसका प्रमाण:

- **योना 4:11** में जब यहोवा ने नीनवे को बचाने का कारण बताया, तो उसमें पशुओं का भी उल्लेख किया गया।
- इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने न केवल मनुष्यों की मन-परिवर्तन की प्रक्रिया को देखा, बल्कि पशुओं के उपवास को भी महत्व दिया।
- पशु स्वयं कुछ नहीं कर सकते, लेकिन उनके उपवास से यह दर्शाया गया कि **पूरे नगर में एक सामूहिक पश्चाताप हुआ, जिसमें हर जीव सम्मिलित था।**

सीख:

- परमेश्वर हमारी प्रत्येक छोटी-बड़ी भक्ति और प्रयास को देखता और याद रखता है।
- अगर पशु भी परमेश्वर की दृष्टि में महत्व रखते हैं, तो हम मनुष्यों के लिए यह और भी बड़ी सीख है कि हमें पूरे मन से उसकी ओर फिरना चाहिए।
- जो कोई भी परमेश्वर की ओर सच्चे हृदय से लौटता है, वह उसकी दया का पात्र बनता है।

प्रश्न 07: खुदा ने रेंड के पौधे से योना को छांव देकर यह क्यों कहा कि उसका दुख दूर हो? ऐसा क्या दुख था योना को?

उत्तर:

वचन में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि योना उस छांव के नीचे बैठा था, जो एक रेंड के पौधे द्वारा दी गई थी। लेकिन योना का दुख धूप नहीं था, बल्कि उसका दुख यह था कि **निनवे के लोग बच गए।**

1. योन का कष्ट:

- योना ने यह देखा कि निनवे नगरवासियों ने अपने पापों से मुंह मोड़ लिया और परमेश्वर से माफी मांगी। यह बात उसे स्वीकार नहीं हो रही थी, क्योंकि वह चाहता था कि वे नष्ट हो जाएं, न कि बचाए जाएं। योना को यह महसूस हो रहा था कि **कभी-कभी परमेश्वर का निर्णय हमारे व्यक्तिगत विचारों से मेल नहीं खाता**, और यही कारण था कि वह परमेश्वर से नाराज़ था।

2. खुदा की दया:

- योना के इस दुख में भी, खुदा ने उसकी दया दिखाने की कोशिश की। उसने एक रेंड के पौधे को उसके ऊपर बढ़ाकर उसे छांव दी। लेकिन योना ने उस पर कृतज्ञता नहीं जताई।
- परमेश्वर ने यह दिखाया कि जब **योन की चिंता और दुख उस पौधे को लेकर था**, तो वह **निनवे के लोगों की चिंता क्यों नहीं करता**, जो अब पाप से मुक्ति पा चुके थे।

3. सीख:

- यह घटना हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर की दया और निर्णय हमेशा हमारे समझ से परे होते हैं, और हमें उन्हें स्वीकार करने के लिए विनम्र और कृतज्ञ होना चाहिए।
- यहाँ तक कि जब हमें व्यक्तिगत रूप से कुछ ठीक नहीं लगता, परमेश्वर की योजना में गहरी समझ और उद्देश्य होता है।

निष्कर्ष:

योना का दुख **उसके अहंकार और अपनी इच्छाओं के कारण** था, न कि बाहरी परिस्थितियों के कारण। परमेश्वर ने उसे सिखाने के लिए एक छोटा सा उदाहरण प्रस्तुत किया कि जैसे उसने रेंड के पौधे से उसे आराम दिया, वैसे ही वह निनवे के लोगों की दया के पात्र हो सकता है।

प्रश्न 08: खुदा ने योना से यह तो कहा कि "तूने रेंड के पेड़ के लिए कोई मेहनत नहीं की फिर भी उस पर तरस खा रहा है," परंतु उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि "मैं निनवे नगर के लिए मेहनत की है, इसलिए मैं उन पर तरस खाता हूँ?"

उत्तर:

खुदा ने ऐसा इसलिए नहीं कहा क्योंकि "मेहनत" जैसी चीज़ को खुदा ने बनाया ही नहीं है। खुदा के लिए **कोई भी चीज़ बनाना मेहनत का काम नहीं है, बल्कि केवल उसकी इच्छा की बात है।**

1. खुदा को मेहनत करने की आवश्यकता नहीं होती

- इंसानों को कुछ बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, चाहे वह घर हो, भोजन हो, या कोई और चीज़।
- लेकिन पृथ्वी, सूरज, चाँद, आकाश, समुद्र, और जीव-जंतु **मेहनत से नहीं बने, बल्कि केवल परमेश्वर के वचन और इच्छा से अस्तित्व में आए।**
- उसी प्रकार, मछली का योना को निगलना और फिर उगल देना, आँधियों का खुदा की आज्ञा मानना—ये सभी बातें किसी की मेहनत का परिणाम नहीं, बल्कि परमेश्वर की संप्रभुता और आज्ञा का परिणाम हैं।

2. आदमी की मेहनत पाप का परिणाम है

- अगर आदम और हव्वा ने पाप नहीं किया होता, तो आज मेहनत जैसी चीज़ होती ही नहीं।
- आदम और हव्वा को ईडन गार्डन में सब कुछ बिना किसी मेहनत के मिलता था।
- लेकिन पाप के बाद, खुदा ने कहा:
"अब से तुम अपने श्रम और मेहनत से अपनी आजीविका चलाओगे।" (उत्पत्ति 3:17-19)
- यानी मेहनत इंसान के लिए **एक दंड** थी, जो उसे पाप के कारण मिली।

3. पाप के बावजूद अनुग्रह से उद्धार मिलता है

- जैसे आदम और हव्वा को ईडन गार्डन में मेहनत नहीं करनी पड़ी थी, वैसे ही **आज भी हमें उद्धार (मुक्ति) मेहनत से नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है।**
- निनवे के लोगों ने भी मेहनत नहीं की थी, बल्कि **उन्होंने मन फिराया, उपवास रखा, और परमेश्वर से अनुग्रह माँगा—और खुदा ने उन्हें दया दी।**
- यही कारण है कि खुदा ने योना से "मेहनत" शब्द का प्रयोग नहीं किया, बल्कि उसने **"दया"** और **"अनुग्रह"** को प्राथमिकता दी।

निष्कर्ष:

खुदा को मेहनत करने की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि वह अपने वचन मात्र से संसार को चला सकता है। मेहनत इंसान के लिए एक आवश्यक चीज़ है, लेकिन उद्धार और अनुग्रह हमें मेहनत से नहीं, बल्कि परमेश्वर की दया और कृपा से मिलते हैं।

प्रश्न 09: योना ने यहोवा पर यह इल्ज़ाम तो लगा दिया कि वह जानता था कि यहोवा निनवे नगर को नष्ट नहीं करेगा, मगर क्या इसका कारण सिर्फ परमेश्वर की दया ही थी, या और भी कुछ था जो योना की समझ से परे था?

उत्तर:

1. योना की सोच:

- योना को लगा कि परमेश्वर ने पहले से ही निनवे को बचाने का निश्चय कर लिया था।
- उसे लगा कि उसका वहाँ जाकर 40 दिन तक प्रचार करना व्यर्थ हो गया।
- इसी कारण उसने यहोवा पर क्रोध किया।

2. वास्तविकता:

- परमेश्वर ने कहा था कि **"निनवे नगर को उलट दिया जाएगा"**, लेकिन यह निर्णय **लोगों के मन परिवर्तन पर निर्भर था।**
- योना के प्रचार के कारण **लोगों ने पश्चाताप किया**, और इसलिए परमेश्वर ने उन्हें बचाया।
- यदि वे पश्चाताप न करते, तो निनवे नष्ट कर दिया जाता।

3. सीखने योग्य बातें:

- परमेश्वर दयालु है, लेकिन पश्चाताप के बिना क्षमा नहीं देता।
- हमें मानकर नहीं चलना चाहिए कि परमेश्वर वैसे ही क्षमा कर देगा, बल्कि हमें उसका सन्देश लोगों तक पहुँचाना होगा, ताकि वे अपने पापों से फिरे।
- जब लोग मन परिवर्तन करते हैं, तभी परमेश्वर अपनी दया दिखाता है और निर्णय बदलता है।

4. योना की गलती:

- योना इसे नहीं समझ सका क्योंकि वह जिद और क्रोध में था।
- उसे लगा कि परमेश्वर ने पहले से निनवे को बचाने का निर्णय ले लिया था, जबकि वास्तविकता यह थी कि **लोगों का पश्चाताप ही उनकी रक्षा का कारण बना।**

निष्कर्ष:

योना की सोच सीमित थी, लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर दयालु तो है, परंतु उसका अनुग्रह **उन्हीं पर होता है जो पश्चाताप करते हैं।** हमारा कर्तव्य है कि हम **लोगों को परमेश्वर का सन्देश सुनाएँ**, ताकि वे मन परिवर्तन करें और परमेश्वर की दया के पात्र बन सकें।

योना की पूरी कहानी का सारांश

1. योना को परमेश्वर की आज्ञा

- परमेश्वर ने योना को आज्ञा दी कि वह **निनवे नगर जाकर वहाँ के लोगों को चेतावनी दे** कि उनके पापों के कारण 40 दिनों में नगर नष्ट हो जाएगा।

2. योना की अवज्ञा और भागना

- योना निनवे जाने के बजाय **तरशीश भागने की कोशिश करता है**।
- परमेश्वर एक **भयंकर आंधी** भेजता है, जिससे जहाज संकट में पड़ जाता है।
- योना समझ जाता है कि यह आंधी उसकी **अवज्ञा के कारण आई है** और कहता है कि उसे समुद्र में फेंक दो।
- नाविक उसे समुद्र में फेंक देते हैं, और आंधी थम जाती है।

3. मछली का योना को निगलना

- परमेश्वर एक **विशाल मछली भेजता है**, जो योना को निगल लेती है।
- योना **तीन दिन और तीन रात** मछली के पेट में रहता है।
- वहाँ वह पश्चाताप करता है और **परमेश्वर से दया की प्रार्थना करता है**।
- परमेश्वर उसे क्षमा करता है, और मछली उसे किनारे पर उगल देती है।

4. निनवे में प्रचार और लोगों का पश्चाताप

- योना निनवे जाकर प्रचार करता है कि **"40 दिनों में यह नगर नष्ट कर दिया जाएगा!"**
- निनवे के लोग डर जाते हैं, और **राजा से लेकर आम जनता तक सभी उपवास रखते हैं, पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर से अनुग्रह की प्रार्थना करते हैं**।
- परमेश्वर उनकी पश्चाताप को देखकर **निनवे को नष्ट करने का विचार त्याग देता है**।

5. योना का क्रोध और परमेश्वर का पाठ

- योना को यह देखकर क्रोध आता है कि परमेश्वर ने निनवे को क्षमा कर दिया।
- वह नगर के बाहर जाकर बैठता है और देखता है कि परमेश्वर क्या करेगा।
- परमेश्वर उसे **एक रेंड़ का पेड़** देता है जिससे उसे छाँव मिलती है, लेकिन अगले दिन कीड़ा उसे खा जाता है और पेड़ सूख जाता है।
- योना इस पर क्रोधित हो जाता है, तब परमेश्वर उसे सिखाता है कि **यदि तू एक पेड़ के लिए इतना दुखी हो सकता है, तो क्या मैं 1,20,000 से अधिक लोगों पर दया नहीं कर सकता?**

शिक्षाएँ (सीखने योग्य बातें):

1. परमेश्वर की आज्ञा से भागना व्यर्थ है – हम चाहें कितनी भी कोशिश कर लें, परमेश्वर की योजना को नहीं टाल सकते।
 2. परमेश्वर की सृष्टि उसके नियंत्रण में है – आँधियाँ, समुद्र, मछली, पेड़ – सब परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, परंतु इंसान सबसे ज्यादा विरोध करता है।
 3. संकट में प्रार्थना करने से परमेश्वर दया करता है – चाहे योना हो या निनवे के लोग, जब उन्होंने मन फिराया और प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उन्हें बचाया।
 4. परमेश्वर हर प्राणी से प्रेम करता है – सिर्फ इंसान ही नहीं, बल्कि पशुओं तक की चिंता करता है।
 5. सत्य मन से पश्चाताप करने पर परमेश्वर अनुग्रह करता है – चाहे पाप कितना भी बड़ा क्यों न हो, मन परिवर्तन से परमेश्वर का अनुग्रह मिलता है।
 6. हम जो भी चुनते हैं, उसका परिणाम हमें ही भुगतना पड़ता है – योना ने निनवे के बजाय तरशीश को चुना और उसे समुद्र में फेंक दिया गया।
-

चेतावनियाँ (सावधानियाँ जो हमें रखनी चाहिए):

1. अवज्ञा विनाश लाती है – यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते, तो आंधी-तूफान और संकट हमारा पीछा करेंगे।
2. मन की कठोरता परमेश्वर की योजनाओं को समझने से रोकती है – योना की तरह हम भी कभी-कभी अपने स्वार्थ के कारण परमेश्वर के बड़े उद्देश्य को नहीं समझते।
3. अनुग्रह को हल्के में नहीं लेना चाहिए – यदि परमेश्वर हमें अवसर देता है, तो हमें पश्चाताप में देरी नहीं करनी चाहिए।
4. जिद और अहंकार विनाशकारी हो सकता है – योना ने देखा कि परमेश्वर ने दया की, फिर भी वह क्रोधित और हठी बना रहा।

निष्कर्ष:

- योना की कहानी हमें सिखाती है कि परमेश्वर जब किसी को बुलाता है, तो वह अपनी योजना को हर हाल में पूरा करता है। चाहे कोई भागने की कितनी भी कोशिश करे, परमेश्वर उसे वापस उसी मार्ग पर ले आता है, जिसे उसने चुना है। इसलिए, हमें हमेशा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए, ताकि हम स्वयं भी बचें और दूसरों के लिए भी आशीष का कारण बनें।
- जब भी हम किसी संकट में पड़ें, तो सबसे पहले परमेश्वर की ओर मुड़ें और उसकी योजना को स्वीकार करें। जो कार्य हमें देर से समझ आता है, उसे शुरुआत में ही समझ लें, तो हम अनावश्यक पीड़ा से बच सकते हैं।
- परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना केवल हमारा व्यक्तिगत मामला नहीं है। हमारे निर्णय कई जिंदगियों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, भूल से भी हमें परमेश्वर के आदेश की अवहेलना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे अकल्पनीय विनाश हो सकता है। जो कार्य योना के आज्ञाकारी होने से हुआ, वही कार्य हमारी आज्ञाकारिता से भी हो सकता है।
- परमेश्वर हमें सुधारने के लिए प्रयास करता है, लेकिन अंतिम निर्णय हमारा होता है। यदि हम मन परिवर्तन करें और अपने जीवन को उसकी इच्छा के अनुसार ढालें, तो हम उसके अनुग्रह और उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं।
- परमेश्वर की दया और अनुग्रह सीमाहीन है। चाहे कोई कितना भी पापी हो, अगर वह सच्चे मन से पश्चाताप करता है, तो परमेश्वर उसे क्षमा कर सकता है। हमें अपने अहंकार, क्रोध, और हठ को छोड़कर परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि,

धन्य हैं हमारे खुदा और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 6th February 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

With gratitude,

Sonu Kumar Saha